''माधवराव सप्रेः छत्तीसगढ़ की पत्रकारिता के प्रकाशपुंज''

अतुल कुमार मिश्र
शोधार्थी, इतिहास विभाग,
गु.घा.वि.वि. बिलासपुर (छ.ग.)
एवं
डॉ.सीमा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक, इतिहास विभाग,
गु.घा.वि.वि. बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश

छत्तीसगढ़ में सुव्यवस्थित पत्रकारिता के विकास का श्रेय व छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता के माध्यम से राष्ट्रीय भावना को जन-जन तक आत्मसात करवाने में माधवराव सप्रे की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। माधवराव सप्रे ने छत्तीसगढ़ के एक छोटे से क्षेत्र पेण्ड्रारोड से 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक पत्रिका का प्रकाशन व संपादन जनवरी १९०० पं.रामरावचिंचोलकर के साथ आरंभ किया, प्रकाशक थे वामन बली राम लाखे। ब्रिटिश शासन की वास्तविक नीति को, उसकी दोहरी चालों को, उसके द्वारा भारतीयों के शोषण को, सबके समक्ष रखने वाला तथा सरकार की कटु आलोचना को जनता तक पहुँचाने वाला माध्यम प्रेस ही था, इस तथ्य से माधवरावसप्रे भलीभांति परिचित थे। माधवरावसप्रे ने समाचारों के अतिरिक्त, ग्रंथों की समालोचना, कहानी, कविता, कटाक्ष भरे व्यंग्य लेखों से तत्कालीन समस्याओं को प्रभावशाली रूप से प्रकाशित किया तथा जनता को आवश्यक राजनैतिक शिक्षा दी। उस युग का मुख्य उद्देश्य जनजागरण था। इस उद्देश्य की प्राप्ति में माधवरावसप्रे की भूमिका सक्रिय तथा उल्लेखनीय रही।

बीज शब्दः माधवरावसप्रे, छत्तीसगढ़ मित्र, पेण्ड्रारोड, राष्ट्रीय आंदोलन, जनजागरण।

समाज वैज्ञानिकी अक्टूबर-मार्च 2022-23
अंक-35-36, ISSN 0973-4201
भारतीय समाज विज्ञान परिषद्